गुरु हरदेव का जीवन , गंगा जमुना सा पावन

सारी दुनिया ने माना, और सर झुकाया

राजमाता गुरबचन की आँखो के तारे

दया धर्म के बचपन , से काम किये सारे

दिल मे उपकार भरा था, बेअथाह प्यार भरा ,

सारी दुनिया ने माना....

युवा हुए तो सेवादल की पहनी वर्दी

ख़ुशी-खुशी छोटे बड़े सबकी सेवा कर दी

बोले कम करम कमाया ,कर्म से गुरु रिझाया

सारी दुनिया ने माना...

गुरुबचन के बाद फिर मिशन के काम किये

काम अमन और प्यार के सुबह शाम किये

अपना सुख चैन न देखा ,और दिन रात रैंन न देखा

सारी दुनिया ने माना ...

साया सविन्दर माता का देके हो गए मौन

'बाबू विजय 'उनकी महिमा गा पायेगा कौन

सतगुरु वर दो अपना, पूरा हो उनका सपना

सारि दुनिया ने माना...

तर्ज: बड़ा बेदर्द जहाँ है...